ऊँटों के नवजात बच्चों की समुचित देखभाल

भाकृअनुप
ICAR

NATIONAL RESEARCH CENTRE ON CAMEL • BIKANER •

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

पोस्ट बॉक्स नं. 07

बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

© राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

प्रकाशक
निदेशक
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
पोस्ट बॉक्स नं. 07
बीकानेर – 334001 (राज.)

मुद्रक
कल्याणी प्रिण्टर्स
माल गोदाम रोड,
बीकानेर–334001
दूरभाष : 526890

ऊँटों के नवजात बच्चों की समुचित देखभाल :

ऊँटों में प्रजनन दर धीमी होती हैं। इसका मुख्य कारण लम्बा गर्भकाल है। फलस्वरूप एक सांडनी से दो वर्ष में एक बच्चे की प्राप्ति होती है। उपलब्ध आंकड़ों से देखा गया है कि ऊँट के बच्चों में मृत्युदर 10-25 प्रतिशत तक है। इन सब बातों को देखते हुए यह अति आवश्यक हो जाता है कि नवजात बच्चों के रख-रखाव का समुचित प्रबन्ध कैसे करें, जिससे उन्हें अकाल मृत्यु से बचाकर, उष्ट्र पालन को और अधिक लाभकारी बनाया जा सके। पालन-पोषण से सम्बन्धित कुछ मुख्य जानकारियाँ निम्न प्रकार से हैं:

1. गर्भावस्था में देखभाल :

गर्भावस्था में बच्चे का सबसे अधिक विकास गर्भ के अन्तिम काल में होता है। अतः इस अवधि में गर्भित सांड को पर्याप्त मात्रा में चारा और दाना खिलाना चाहिए। मोटे तौर पर चराई के अलावा करीब 1.5-2.0 कि.ग्रा. दाना या फिर हरा चारा उपलब्धता के अनुसार खिलाया जाना चाहिये। अगर हरा चारा उपलब्ध नहीं हो तो विटामिन "ए" का टीका लगवाना अति आवश्यक है जिससे टोरडा/टोरडी की रतौंधी रोग से सुरक्षा की जा सके।

2. ब्याँत के अन्तिम दिनों में ग्याभिन सांड को टोले से अलग करना :

नवजात बच्चे की उचित देखभाल के लिए यह आवश्यक है कि गर्भित सांड को अन्तिम माह में चरने हेतु टोले से अलग कर खेत व ढ़ाणी के आस पास ही चरने भेजना चाहिए। प्रसव के अनुमानित समय के एक सप्ताह पूर्व से सांड का विशेष ध्यान रखें। ब्याँत के समय किसी तरह की कठिनाई होने पर पशुचिकित्सक की सहायता लेवें। जन्म स्थान साफ व सूखा होना चाहिए। बाड़े के फर्श को कीटाणुओं से मुक्त रखने के लिए 15 दिन पूर्व फर्श की गुड़ाई करके चूना और बी.एच.सी. पाउडर मिला देना चाहिए।